रामानुजन : एक विलक्षण प्रतिभा

शशिधर कपूर

यदि आप स्कूली बच्चों से पूछें कि क्या वे सी.वी. रामन को जानते हैं, तो बहुत सम्भावना है कि उनका उत्तर हां में हो। मगर ज़रा रामानुजन के बारे में पूछिए। स्थिति बिल्कुल विपरीत नज़र आएगी। इसका एक कारण तो यही है कि गणित में नोबेल पुरस्कार नहीं होता; जो तत्काल व्यापक मान्यता पाने का माध्यम होता है। दूसरे यह कि विज्ञान के नॉन-अप्लाईड यानी गैर-व्यावहारिक पहलुओं को मान्यता बड़ी मुश्किल से मिलती है।

विकसित समाजों में ऐसे व्यक्तियों का भी समुचित स्थान होता है जो विज्ञान का अध्ययन विज्ञान के लिए करते हैं, किसी व्यावहारिक उपयोग की दृष्टि से नहीं। जहां व्यावहारिक रूप से उपयोगी विज्ञान का अध्येता यथास्थिति से ही संतुष्ट रहता है या कुछ छुटपुट सुधार करता है, वहीं विशुद्ध विज्ञान के ये स्वप्नदृष्टा प्रगति की लम्बी छलांग मारते हैं। विकसित समाजों में ऐसे व्यक्तियों को रोज़मर्रा की चिंताओं से मुक्त रखकर अपने पसंद के क्षेत्र में काम करने की आज़ादी दी जाती है।

एक रूढ़िवादी वैष्णव परिवार में 22 दिसम्बर 1887 को जन्मे श्रीनिवास रामानुजन अयंगार एक अचम्भा थे। उनके स्कूल के प्राचार्य ने तो यहां तक कहा था कि 100 में से 100 अंक उनके आकलन के लिए निहायत अपर्याप्त हैं। बचपन से ही उनमें एक ज़िद्दी प्रवृत्ति थी। जो काम वे नहीं करना चाहते, उसे किसी हालत में नहीं करते-चाहे स्कूल जाने की बात हो या किसी विषय को पढ़ने की। उनकी ज़िन्दगी का पहला अहम मोड़ वह था जब 1903 में उनके कॉलेज के मित्रों ने उन्हें जॉर्ज शूब्रिज कार की पुस्तक *अ सिनॉप्सिस ऑफ एलीमेन्टरी रिज़ल्ट्स इन प्योर एण्ड अप्लाइड मैथेमैटिक्स* भेंट की। इसके बाद रामानुजन सब कुछ छोड़कर गणित के दीवाने हो गए। नतीजा वही हुआ जो होना था। हाईस्कूल के अंकों के आधार पर जो छात्रवृत्ति मिली थी वह 1904 में जाती रही। बाहरवीं कक्षा में वे फेल हो गए। 1905 में फिर बैठे, फिर फेल हो गए।

इस समय उनके व्यक्तित्व का एक और पहलू सामने आया: वे अपनी सार्वजनिक छवि को लेकर बहुत संवेदनशील थे। दूसरी बार फेल होने पर वे भागकर विशाखापट्टनम चले गए। गणित का सौभाग्य कि उनके माता-पिता एक महीने में ही उन्हें ढूंढकर वापस ले आए। 1906 व 1907 में उन्होंने फिर कोशिश की परन्तु पहले से भी बुरी तरह फेल हुए। लिहाज़ा पिछले वर्षों का मेधावी छात्र 1907 में शैक्षिक कंगाल बन गया। इस समय उनके साथ वही किया गया जो भटके हुए पुरुषों को रास्ते पर लाने के लिए भारतीय परिवारों में किया जाता है - 1909 में उनकी शादी साढ़े नौ साल की जानकी से कर दी गई। बहरहाल वह मायके में ही रही।

रामानुजन के साथ शारीरिक दिक्कतें भी कम नहीं रहीं - 1910 में उनका हाइड्रोसील का ऑपरेशन हुआ। इस समय तक रामानुजन अपने गणितीय कार्य का पहला भाग (1904-1907) संकलित कर चुके थे। यही हमें प्रथम प्रकाशित नोटबुक के रूप में उपलब्ध है। लेकिन कॉलेज डिग्री के बिना न तब नौकरी मिलती थी न आज मिलती है। वे नौकरी की भीख मांगते दर-दर भटकते रहे। और यह सिद्ध करने के लिए कि वे फालतू आदमी नहीं हैं, उनके पास था ही क्या? वही नोटबुक जिसमें छितरी बातें कोई नहीं समझता था! सराहने की बात तो जाने ही दें।

बेशक उनकी संजीदगी, मासूमियत तथा आकर्षक व्यक्तित्व के कारण लोग उनकी बातें सुनते थे, उन्हें पंसद भी करते थे किन्तु किसी ने उन्हें ठोस मदद न दी। अन्ततः नेल्लोर के कलेक्टर रामचंद्र राव ने 25 रुपए महीना देने का वायदा किया। इस 25 रुपए के आधार पर वे मद्रास में रहने लगे। किन्तु जल्दी ही यह पैसा कम पड़ने लगा और एक बार फिर रामानुजन नौकरी ढूंढने निकल